दर्शन और धर्म

धर्म का हिन्दी में जो अर्थ है उसका अंग्रेजी शब्द से अन्तर है। हिन्दी में धर्म शब्द का अर्थ है जिसे धारण किया जाय। भारतीय दर्शनों में धर्म शब्द अलग-2 अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। लेकिन अंग्रेजी में धर्म को Religion कहा जाता है जो कि दो लैटिन शब्दों Re- Ligare से बना है। इनमें Re का अर्थ वापस अथवा पुनः और Ligare का अर्थ बाँधना है। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में धर्म का अर्थ पुनः बाँधना; अर्थात् रिलीजन उस सूत्र को कहा जाता है जो व्यक्ति को कुछ सिद्धान्तों में बाँधता अथवा जोड़ता है।

धर्म एक व्यापक अर्थ को अपने में समाहित किये हुए है। विभिन्न विद्वानों ने धर्म की अनेक प्रकार से व्याख्या की है। धर्म की दार्शनिक व्याख्या की सांक्षिप्त रूप रेखा को इस प्रकार स्पष्ट करते हुए रख सकते हैं-

1. धर्म एक मानसिक अवस्था है:- पाश्चात्य दर्शन में धर्म की बुद्धिवादी व्याख्या प्रस्तुत करने का श्रेय हीगल तथा उसके अनुयायियों को है। इसके बाद मैकडागर्ड ने धर्म की परिभाषा करते हुए कहा है कि, "धर्म व्यक्तिगत ही एक मानसिक अवस्था है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह हमसे और विस्तृत विश्व में एक सामंजस्य की अवस्था पर आधारित एक भावना के रूप में सर्वोत्तम रीति से वर्णित किया जा सकता है।"

2. धर्म एक सर्वोच्च शुभ है:- कुछ विद्वानों ने धर्म की परिभाषा नैतिक मूल्यों के आधार पर प्रतिपादित की है। इस प्रकार के विद्वानों में ब्रैडले प्रमुख हैं। इन्होंने धर्म के विषय में कहा है, "नैतिकता एक अनन्त ऊँचे शुभ तक पहुँचाती है, वह वहाँ समाप्त होती है

ता. 14/5/2020

2 II (SW)

Page ②

'धर्म'

जिसको हम धर्म कहते हैं" इसी प्रकार मैथ्यू आर्नल्ड ने कहा है. "धर्म भावनामय नैतिकता के अलावा और कुछ नहीं है"

③ मुल्यों के संरक्षण में आस्था ही धर्म है—

कुछ विचारकों के दृष्टिकोण से धर्म की मुल्यात्मक व्याख्या की जाती है। हाफडिंग ने धर्म की व्याख्या मुल्यों के संरक्षण में आस्था के रूप में की है।

इस प्रकार वर्णित परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि धर्म की व्याख्या करना एक जटिल कार्य है क्योंकि विभिन्न विद्वानों ने अपने-2 मतानुसार अपने भावनाओं के अनुकूल धर्म की व्याख्या करने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने-अपने दृष्टिकोणों से धर्म की व्याख्या की है जो वर्णित उक्त परिभाषाओं से भिन्न है। यहाँ हमारा उद्धरण धर्म की दार्शनिक व्याख्या से है। यहाँ दार्शनिक रूप में धर्म की व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं कि. "धर्म चेतना की एक ऐसी जटिल प्रक्रिया है जिसमें परम शुभ मुल्य अथवा ईश्वर के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण और अनुभूतियों का समावेश होता है" अनेक रूपों में धर्म धार्मिक अनुभूतियों की बौद्धिक एवं तार्किक व्याख्या प्रस्तुत करता है। आगे हिन्दू धर्म दृष्टिकोण से धर्म की व्याख्या अपेक्षित है।

Scanned with CamScanner